

ZUME सत्र 2 का वीडियो स्क्रिप्ट्स

सुसमाचार

इस सत्र में, हम सीखेंगे कि परमेश्वर की कहानी को कैसे बताना है – सुसमाचार – सृष्टि की रचना से न्याय के दिन तक, मानवजाति की शुरुवात से दुनिया के अंत तक। परमेश्वर की कहानी सुनाने के बहुत से तरीके हैं।

सर्वश्रेष्ठ तरीका उस व्यक्ति पर निर्भर होगा जिसे आप बता रहे हैं और दुनिया के प्रति उनका नजरिया और जीवन में उनका अनुभव।

परमेश्वर प्रचार करने के लिए सुनने के लिए इच्छुक व्यक्ति का इस्तेमाल करते हैं।
ये उनका कार्य है। इसमें जुड़ने के लिए वह हमें बुलाते हैं।

परमेश्वर की कहानी को बताने का एक तरीका यह बताना है कि सृष्टि की रचना से लेकर परमेश्वर के न्याय के दिन तक क्या हुआ।

जब हम इस तरह से परमेश्वर की कहानी सुनाते हैं, तो हम इसे लंबा या छोटा बना सकते हैं, विस्तार में या सन्क्षिप्त में लेकिन हमेशा सुननेवाले की संस्कृति से जुड़े रहकर।

विभिन्न संस्कृतियों और दुनिया के नजरिये से उनकी कहानी को बताने में, आप अपने हाथों को हिला सकते हैं, जो सीखना और सीखाना आसान बनाता है।

ये परमेश्वर के शुभ समाचार की कहानी है –
आरंभ में, परमेश्वर ने पूरी दुनिया और इसमें की वस्तुओं को बनाया।

उन्होंने पहले पुरुष और पहली स्त्री को बनाया। उन्होंने उसे एक सुंदर बगीचे में रखा। परमेश्वर ने उन्हें अपने परिवार का हिस्सा बनाया और उनके साथ एक नजदीकी संबंध रखा।

सदा जीवित रहने के लिए परमेश्वर ने उन्हें सृजा। तब मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं थी।
ऐसे सिद्ध स्थान में भी, मनुष्य ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और दुनिया में पाप और कष्ट को लाया।

परमेश्वर ने मनुष्य को बगीचे में से निकाल दिया। मनुष्य उनके बीच का संबंध टूट गया।

अब मनुष्य को मृत्यु का सामना करना था।

सैकड़ों सालों से, परमेश्वर विश्व में दूतों को लगातार भेजते रहे। उन्होंने मनुष्य को उसके पापों का स्मरण कराया लेकिन उसे परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और वायदे के बारे में भी बताया कि वह दुनिया में एक उद्धारकर्ता भेजेंगे।

उद्धारकर्ता परमेश्वर और मनुष्य के बीच संबंध को सुधारेंगे। उद्धारकर्ता मनुष्य को मृत्यु से छुड़ावेंगे। उद्धारकर्ता अनंत जीवन देंगे और मनुष्य के साथ सदा सर्वदा रहेंगे।

परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करते हैं कि जब सही समय आया तो उन्होंने जगत में अपने पुत्र को उद्धारकर्ता के रूप में भेजा।

यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। उन्होंने एक कुँआरी के द्वारा इस दुनिया में जन्म लिया। उन्होंने एक सिद्ध जीवन जीया। उन्होंने कभी पाप नहीं किया।

यीशु ने लोगों को परमेश्वर के बारे में सीखाया। उन्होंने अपनी महान सामर्थ को दिखाते हुए बहुत से चमत्कार किए। उन्होंने बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला, बहुतों को चंगा किया और अंधों की आँखें खोलीं तथा बहरों के कान खोले और लंगडों को चलाया।

यीशु ने मरे हुएों को भी जिलाया।

बहुत से धार्मिक गुरु यीशु से डरते थे और ईर्ष्या करते थे। वे उन्हें मार डालना चाहते थे।

उन्होंने कभी पाप नहीं किया था, इसलिए यीशु को मरने की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन उन्होंने हम सभी के लिए एक बलिदान के रूप में मरना चुना। उनकी दर्दनाक मृत्यु ने मनुष्यों के पापों को हटा दिया।

इसके बाद, यीशु को एक कब्र में गाड़ दिया गया।

परमेश्वर ने यीशु के बलिदान को देखा और इसे स्वीकार किया। तीसरे दिन यीशु को मृत्यु में से जिलाने के द्वारा परमेश्वर ने अपनी स्वीकारिता को दर्शाया।

परमेश्वर ने कहा कि यदि हम विश्वास करें और अपने पापों के लिए यीशु के बलिदान को ग्रहण करें - यदि हम अपने पापों से फिरे और यीशु के पीछे चले, तो परमेश्वर हमें सभी पाप से शुद्ध कर देंगे और अपने परिवार में हमारा स्वागत करेंगे।

परमेश्वर, पवित्र आत्मा को भेजते हैं हमारे अंदर रहने के लिए और यीशु के पीछे चलने के लिए हमें सक्षम बनाते हैं।

इस सुधरे हुए संबंध को दर्शाने और इसपर मोहर लगाने के लिए हमें पानी में बपतिस्मा दिया जाता है।

मृत्यु के चिन्ह के रूप में हम पानी में गाड़े जाते हैं। नये जीवन के चिन्ह के रूप में हमें पानी में से जिलाया जाता है - यीशु के पीछे चलने के लिए।

मृत्यु में से जी उठने पर यीशु ने पृथ्वी पर 40 दिन बिताए।

यीशु ने अपने शिष्यों को सीखाया कि पूरी दुनिया में जाकर सभी लोगों को उनके उद्धार का सुसमाचार सुनाओ।

यीशु ने कहा - इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को शिष्य बनाओ; और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें मानना सिखाओ जिसकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है, और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।

यीशु उनकी आँखों के सामने स्वर्ग में उठा लिए गए।

यीशु एक दिन, इसी तरह से वापस आयेंगे।

जिन्होंने उनसे प्रेम नहीं किया और उनकी आज्ञा नहीं मानी, उन्हें वह अनंत दंड देंगे।

जिन्होंने उनसे प्रेम किया और उनकी आज्ञा मानी, उन्हें वह सदा के लिए ग्रहण करेंगे और प्रतिफल देंगे।

हम नये स्वर्ग में और नई पृथ्वी में सदा जीवित रहेंगे।

मेरे पापों के लिए यीशु ने जो बलिदान दिया उसपर मैंने विश्वास किया है और इसे ग्रहण किया है। उन्होंने मुझे शुद्ध किया और परमेश्वर के परिवार के सदस्य के रूप में लौटा लिया। वह मुझसे प्रेम करते हैं, मैं उनसे प्रेम करता हूँ और उनके राज्य में सदा जीवित रहूँगा।

परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं और वह चाहते हैं कि आप इस उपहार को ग्रहण करें। क्या आप अब इसे ग्रहण करना चाहेंगे?